+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

YOJANA MAGAZINE ANALYSIS

(योजना पत्रिका विश्लेषण)

(भारत का ताना-बाना)

(May 2024)

(Part I)

TOPICS TO BE COVERED

- संपादकीय: परंपरा का ताना-बाना
- बुनाई की आकर्षक दुनिया, भारतीय बुनाई में क्षेत्रीय विविधता
- भारतीय बुनाई के स्थायित्व को प्रोत्साहन

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

संपादकीय: परंपरा का ताना-बाना

परिचय:

- भारत के सांस्कृतिक परिवेश की गूढ़ संरचना में हथकरघा उद्योग के रूप में देश की समृद्ध विरासत और कलात्मक कौशल के प्रमाण मौजूद हैं।
- कश्मीर की हिमाच्छादित घाटियों से लेकर कन्याकुमारी के धूप से नहाए तटों तक भारत का विविध परिदृश्य हस्त कौशल से सृजित असाधारण वस्तुओं की बहुरंगी छटा से सुशोभित है और प्रत्येक में सदियों पुरानी परंपराओं और शिल्प कौशल की अमिट छाप देखी जा सकती है।

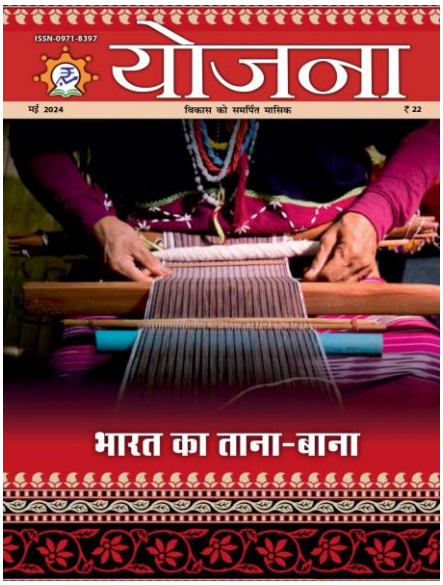

बुनकरों की गहन विरासत:

- भारत की हथकरघा धरोहर के केंद्र में निहित है बुनकरों की गहन विरासत, जिनके कुशल हाथों ने विश्व के कुछ उत्कृष्ट वस्त्रों में जान फूंक दी है। भारत के असंगठित क्षेत्र में कृषि के बाद दूसरे स्थान पर आने वाला हथकरघा क्षेत्र देश भर में तीस लाख से अधिक कारीगरों के लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण स्रोत है।

- कश्मीर की पश्मीना शॉल से लेकर गुजरात की आकर्षक बंधनी साड़ियों तक हथकरघा उद्योग के मजबूत एवं सतत शिल्प कौशल को दर्शाते हैं, जो हालांकि परंपरा से गहन रूप से जुड़ा है पर साथ ही आधुनिक रुझान के अनुकूलनीय है।

वैश्विक बाजार में हथकरघा उत्पादों द्वारा हासिल पहचान:

- भारतीय हथकरघा उत्पादों द्वारा हासिल वैश्विक पहचान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। कुशल कारीगरी और दृढ़ समर्पण के चलते भारतीय बुनकरों ने वैश्विक बाजार में अपने लिए एक जगह बनाई है जिसका निर्यात कोविड-19 महामारी की शुरुआत से पहले 300 मिलियन डॉलर वार्षिक से अधिक था।
- बाजार की मांग में उतार-चढ़ाव और मशीन-निर्मित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भारत के हथकरघा क्षेत्र की स्थिति सुदृढ़ बनी हुई है जिसे अंतरराष्ट्रीय मांग बढ़ाने और स्वदेशी ब्रांडिंग को बढ़ावा देने की पहल और उपायों का सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहा है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

हथकरघा सांस्कृतिक पहचान का भी संरक्षक:

- दरअसल, भारतीय हथकरघा का केवल आर्थिक महत्व ही नहीं है बल्कि सांस्कृतिक जीवटता और पहचान का संरक्षक भी है। देश भर में, कच्छ में भुजोड़ी, अहमदाबाद में आशावली और उत्तर प्रदेश में वाराणसी जैसे हथकरघा समूह परंपरा के गढ़ के रूप में हैं जहां सदियों पुरानी बुनाई शैली पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है।
- ये समूह न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को कायम रखते हैं बल्कि निवासियों में सामुदायिक और सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी बढ़ावा देते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

बुनाई की आकर्षक दुनिया, भारतीय बुनाई में क्षेत्रीय विविधता:

केरल में बुनाई कार्य:

- भारत में बुनाई की आकर्षक दुनिया की इस यात्रा की शुरुआत सुदूर दक्षिण पश्चिम में केरल राज्य से मुख्य रूप से 'श्वेत रंग' से हुई।
- 19वीं सदी के अंत में रासायनिक रंगों के आगमन से पहले भारत के सभी हिस्सों में 'सफेद रंग' प्रमुख आधार रंग था। न केवल गर्म से उष्ण जलवायु की विवशता के कारण बल्कि प्राकृतिक रंगों की सीमित उपलब्धता और खर्च के कारण भी सफेद रंग शुद्धता, तपस्या और संयम की एक पारंपरिक अभिव्यक्ति थी।

- सफेद रंग का सौंदर्य अनुभव, वर्ग और समुदाय को कई तरह से अलग करता हुआ प्रतीत होता है, जिसमें गैर-विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए वजनदार, ठोस कपड़ों से लेकर कुलीन लोगों के लिए बढ़िया कपड़े और यहाँ तक कि अमीर लोगों के लिए रेशम के कपड़े भी शामिल हैं।

- रासायनिक रंगों के सस्ते विकल्पों ने अनजाने में सामाजिक परिवर्तन के द्वार खोल दिए, जिसे तब तक पर्याप्त अभिव्यक्ति नहीं मिली थी।
- केरल में बुनकर अब अपने अच्छी तरह से बुने हुए वस्त्र को उसके बॉर्डर में सीमित रंग देकर दर्शाने लगे थे, जिसे विशेष अवसरों के लिए सोने से बनाया जाने लगा। केरल में हथकरघा और कई मिलें घरेलू लिनेन जैसे तौलिए और कॉम्पैक्ट बुनाई वाली चादरों की एक श्रृंखला के लिए भारत और उसके बाहर भी प्रसिद्ध हैं।

कर्नाटक में बुनाई कार्य:

- कर्नाटक में, 'मोलकालमुरु' जैसे स्थानों में कपास और रेशम की बुनाई के केंद्र सूत प्रतिरोध और ताने-बाने में पैटर्न वाले तत्वों के साथ और 'इल्कल' अपने तीन शटल बुनाई और अतिरिक्त ताने-बाने पैटर्न के साथ बढ़ते रहते हैं। 'उडुपी' 'कोल्लेगल' और 'रुक्मपुर' में कपास के साथ-साथ उनकी साड़ियों और कपड़ों के लिए प्रसिद्ध हैं।
- यह ध्यान देने योग्य है कि कई रेशम जिन्हें कश्मीर, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश सहित भारत के अन्य हिस्सों में हाथ से नहीं बुना जा सकता है कर्नाटक में बेचे जाते हैं जिन्हें 'डुपीयन रेशम' के रूप में जाना जाता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

गोवा में बुनाई कार्य:

- बुनाई की विरासत वाले एकमात्र राज्य के रूप में गोवा पर पुर्तगालियों द्वारा प्रतिबंध लगाया जाना एक अप्रत्याशित रहस्योद्घाटन था। बुनकर सचमुच तहखानों में भूमिगत हो गए और अपने करघे के लिए खुदाई करने लगे।
- वफादार खेत मजदूरों, कोली महिला मछुआरों और धांगड़ चरवाहों की मांग ने उनकी बुनी हुई साड़ियों के लिए तैयार बाजार उपलब्ध कराया।
- चेक और रंग संयोजन की जटिलता ही उन्हें उनके पड़ोसियों से अलग करती थी।

महाराष्ट्र में बुनाई कार्य:

- महाराष्ट्र में वर्धा के क्षेत्र में कपास की खेती और दक्षिण-पूर्व में विदर्भ और गढ़चिरौली में रेशम की खेती का व्यापक आधार मिलता है।
- महाराष्ट्र का पूर्वी क्षेत्र अपने नागपुर और पुनेरी रेशम और सूती साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। पश्चिम की ओर बढ़ते हुए, शुद्ध रेशम में 'करवट काठी' और 'जोटे' और 'पाटल' साड़ियों में बॉडी और बॉर्डर में सूती रेशम के मिश्रण का उपयोग बड़ी प्रवीणता से किया जाता है ताकि भारी वार्डर के साथ अच्छी तरह से बुना हुआ ग्राउंड तैयार हो सके।

गुजरात में बुनाई कार्य:

- गुजरात बुनाई प्रिंट और बांधनी कपड़े का व्यापक उत्पादक आधार रहा है, जो पहले कच्छ क्षेत्र तक ही सीमित था लेकिन अब सौराष्ट्र और मुख्य भूमि तक भी फैल गया है।
- यह गुजरात का यंत्रीकृत कपड़ा उद्योग है जो विशेष रूप से आजादी के बाद काफी बढ़ गया है। यह गुजरातियों में जन्मजात उद्यमशीलता कौशल है जिसने कुछ बुनकरों और मुद्रकों को 1970 के दशक में 'गुर्जरी' जैसी विपणन एजेंसियों और बाद में अन्य गैर सरकारी संगठनों और निजी एजेंसियों की मदद से जीवित रहने में सक्षम बनाया है।

राजस्थान में बुनाई कार्य:

- हालांकि राजस्थान में फर्श कवरिंग, दरी की कताई- बुनाई के साथ-साथ प्लेन फैब्रिक की परंपरा रही है इन्हें महिलाओं के परिधान बनाने, निचले और ऊपरी वस्त्रों को बनाने के साथ साथ पुरुषों की धोती, शर्ट और ऊपर हिस्से में पहनने वाले कपड़ों पर प्रिंट किया जाता था।

पंजाब और हरियाणा में बुनाई कार्य:

- पंजाब और हरियाणा, जो 1964 से अलग राज्य बन गए हैं, में घरेलू लिनन, फर्श कवरिंग और रोजमर्रा के पहनने के लिए मोटे कपड़े की बुनाई का एक व्यापक आधार था, जिसने काफी हद तक मिलों को रास्ता दिखा दिया है।
- आजादी के बाद जो मिलें काफी विकसित हुई हैं, वे बड़े पैमाने पर प्रिंटेड और सादे दोनों तरह के ऊनी कपड़ों और शॉलों के साथ-साथ मशीन से बुने हुए कपड़ों के लिए जानी जाती हैं।

हिमाचल प्रदेश में बुनाई कार्य:

- हिमाचल प्रदेश, जो 1964 से पहले पंजाब का हिस्सा थी, हमेशा अपने कुल्लू और किन्नौर कपड़ों और शॉलों के साथ-साथ कंबल और हेडवियर सहित फर्श और बिस्तर लिनन के घरेलू उत्पादों के लिए प्रसिद्ध रहा है।

जम्मू और कश्मीर में बुनाई कार्य:

- जम्मू और कश्मीर के साथ-साथ लद्दाख में मोटे से महीन पश्मीना भेड़ और बकरी के ऊनों की ऊन कताई का एक विस्तृत आधार है जो परिधानों और शॉलों, रोजमर्रा के उपयोग के लिए कंबल और विशेष अवसरों के लिए खुदरंग/पैटर्न वाले स्व-रंगीन कपड़ों की एक व्यापक किस्में हाथ से बुनीं जाती हैं।

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में बुनाई कार्य:

- मध्य प्रदेश और नवनिर्मित राज्य छत्तीसगढ़ से पता चलता है कि कैसे एक व्यापक आधार चंदेरी, महेश्वर और बिलासपुर जैसे प्रसिद्ध बुनाई केंद्रों का भरण पोषण करता है। पूर्व से पश्चिम तक कपास की खेती, हाथ से कताई, बुनाई, छपाई और रंगाई की एक लंबी परंपरा रही है।
- हालांकि हाथ से कताई काफी हद तक कम हो गई है, लेकिन इसकी बुनाई का आधार बढ़ गया है, खासकर ऊपर उल्लिखित तीन प्रसिद्ध केंद्रों में।

उत्तर प्रदेश में बुनाई कार्य:

- उत्तर प्रदेश में बढ़िया सूती साड़ी उत्पादन का एक व्यापक आधार है: बुनी हुई, कढ़ाई की हुई प्रिंटेड साड़ियां, जो वाराणसी के व्यापार और सांस्कृतिक केंद्र में देखी गई बेहतरीन तकनीकी और सौंदर्य संबंधी उत्कृष्टता से परिपूर्ण है।
- इस सांस्कृतिक राजधानी ने मुगल कारखानों की स्थापना के बाद पूरे राज्य के साथ साथ सुदूर फारस से भी बुनाई कौशल को ग्रहण किया है और तिब्बत और दक्षिण एशिया के अन्य हिस्सों के साथ इसका लंबे समय से व्यापार रहा है।
- इसे विशेष रूप से दक्षिण भारतीय बाजार के साथ-साथ पूर्व में बंगाल के लिए बुना गया है, और इसने विभिन्न राज्यों के बुनकरों को भी शामिल किया है।

बिहार और झारखंड में बुनाई कार्य:

- बिहार में घरेलू उपयोग और परिधान के लिए 'तसर' कपड़ों के साथ साथ तसर साड़ियों की रेंज में वृद्धि हुई है विशेष रूप से भागलपुर क्षेत्र से जिसने 1980 के दशक से पुनरुद्धार देखा है।
- बिहार का दक्षिणी भाग जो अब नवनिर्मित झारखंड राज्य है, अपने आदिवासी समुदायों के लिए मोटे सूती साड़ियों के साथ-साथ 'तसर' की खेती, कताई और बुनाई की एक विस्तृत श्रृंखला का दावा करता है।

पश्चिम बंगाल में बुनाई कार्य:

- पश्चिम बंगाल ने अपनी साड़ी बुनाई में अधिक निरंतरता देखी है, हालांकि करघा प्रौद्योगिकी के उन्नयन के कारण इसने अपने मोटे सूती कपड़ों को खो दिया है। इसके महीन कपास का प्रसार हुआ है।
- पश्चिम बंगाल के बुने हुए और कढ़ाई वाले दोनों उत्पादों का बाजार काफी बढ़ गया है। हालांकि बुनकर अपनी महत्ता के घट जाने की निंदा करते हैं।

तमिलनाडु में बुनाई कार्य:

- तमिलनाडु रूपांकनों के परिष्कृत और परिभाषित होने, एक रहस्यमय रंग पैलेट और कपास और रेशम को निपुणता विशिष्ट रूप से या संयोजन द्वारा चिह्नित है।

- मोटे से लेकर महीन सूती सफेद, रंगीन और धारीदार या चेक की एक विस्तृत श्रृंखला से एहसास होता है कि बुनकर समुदाय गुणवत्ता को बनाए रखने में कैसे सक्षम है।
- 'ऊसी वनम' सुई की महीन धारियों से लेकर 'थंडावलम' बोल्ड जोड़ीदार धारियों तक सूती या रेशम में या दोनों नाम या स्केल द्वारा कोडित, धारियों, चेक और कोरवैश्री शटल मंदिर शिखर रूपों की कई विविधताओं से तमिलनाडु डिजाइन भंडार का विस्तार हुआ है क्योंकि प्रकृति और मंदिर वास्तुकला से प्रेरित जटिल ताने-बाने पैटर्न को अपनाकर इसने अपना विस्तार किया है।
- रंग, पैमाने और कपड़े की संरचना की सटीकता ही तमिलनाडु की साड़ियों की अलग पहचान है।

भारतीय हस्तशिल्प के राह में चुनौतियां:

- सैद्धांतिक रूप से सामाजिक या आर्थिक रूप से बढ़े हुए - मशीनीकरण की निंदा करने की कोई आवश्यकता नहीं है, और वास्तव में इसे हाथ-कौशल क्षेत्र के साथ विरोध करने की आवश्यकता नहीं है। हस्त-कौशल क्षेत्र वास्तव में, विकास के लिए आधार अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला है जो इसके भीतर और उत्पादन की बढ़ती मशीनीकृत प्रणालियों दोनों में हो सकता है।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय हस्तशिल्प की आगे की राह:

- समकालीन संदर्भ में औद्योगीकरण और वैश्वीकरण की बढ़ती मजबूरी के बावजूद पारिस्थितिक रूप से व्यवहार्य और मजबूत विकास के बारे में जागरूकता भी बढ़ रही है। कुशल हाथों से कताई और बुनाई के अपने समृद्ध संसाधनों के साथ भारत मशीनीकृत और उच्च प्रौद्योगिकी के साथ धीमे लेकिन उच्च-कुशल उत्पादन क्षेत्रों को संतुलित करने का रास्ता दिखाने के लिए लाभप्रद स्थिति में है।
- उदाहरणस्वरूप आज, साड़ी रोजमर्रा के लिए तेजी से लुप्त होने वाला परिधान भले ही है, विशेष अवसर के रूप में यह बनी रहेगी। भारतीय महिलाएं आज सिले हुए कपड़ों वाले पश्चिमी कपड़ों के लिए प्राथमिकता दिखा सकती हैं, फिर भी साड़ी पहचान और औपचारिकता दोनों के प्रतीक के रूप में बनी हुई है। दिलचस्प बात यह है कि साड़ी बहुराष्ट्रीय कॉर्पोरेट संगठनों के बोर्डरूम, अदालतों में और उन नए पावर पेशेवरों के बीच बढ़ती उपस्थिति का दावा कर रही है जो अपनी पहचान के प्रति सचेत हैं और इससे अपनी ताकत अंकित करना चाहते हैं।

+918988885050
+918988886060
www.vajiraoinstitute.com
info@vajiraoinstitute.com

भारतीय बुनाई के स्थायित्व को प्रोत्साहन:

परिचय:

- भारत में कपास का बहुत महत्व है, न केवल एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक फसल के रूप में बल्कि देश की समृद्ध वस्त्र विरासत के प्रतीक और परंपरा, कलात्मकता और स्थिरता के प्रतीक के रूप में भी।

- सदियों से चली आ रही समृद्ध विरासत के साथ, भारतीय बुनाई ने न केवल लाखों लोगों की शोभा बढ़ाई है, बल्कि विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका भी कायम रखी है।

भारतीय बुनाई द्वारा स्थायित्व को प्रोत्साहन:

- स्थायित्व की तलाश में भारतीय बुनाई को जो चीज अलग करती है, वह है उनकी अंतर्निहित पर्यावरण अनुकूलता। परंपरागत रूप से, भारतीय बुनकर कपास, रेशम, जूट और ऊन जैसे प्राकृतिक रेशों पर भरोसा करते हैं, जो उन्हें स्थानीय रूप से प्राप्त होते हैं और उन्हें सदियों पुरानी तकनीकों का उपयोग करके संसाधित किया

जाता है जिनका पर्यावरण पर न्यूनतम प्रभाव पड़ता है। ये फाइबर प्रदूषण और संसाधन की कमी में योगदान देने वाले सिंथेटिक विकल्पों के विपरीत, बायोडिग्रेडेबल, नवीकरणीय और जैव विविधता में सहयोग देते हैं।

- इसके अलावा, पारंपरिक भारतीय बुनाई प्रथाएं स्थानीय समुदायों में गहराई से व्याप्त हैं, जो सामाजिक एकजुटता और आर्थिक सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देती हैं। देश भर में फैले बुनाई समूह अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में जहां वैकल्पिक रोजगार के अवसर दुर्लभ होते हैं, लाखों कारीगरों को आजीविका प्रदान करते हैं।

बुनाई में स्थायित्व प्रोत्साहन में भारतीय कपास निगम की भूमिका:

- भारतीय कपास निगम (CCI) कपास की खेती और बुनाई कार्यों की स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- भारतीय कपास निगम देश में कपास किसानों के आर्थिक हितों की रक्षा के लिए कपास के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य संचालन करने के लिए एक केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करती है। यह पहल कपास किसानों के लिए एक ढाल के रूप में कार्य करती है, विशेष रूप से बाजार में अस्थिरता के समय में, शोषण को रोकती है और उनके लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करती है।

भारतीय बुनाई के स्थिरता की दिशा में चुनौतियां:

- भारतीय बुनाई के कई गुणों के बावजूद, स्थिरता की दिशा में उनकी यात्रा में चुनौतियां बनी रहती हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा, बुनियादी ढांचे की कमी और युवा पीढ़ी के बीच घटती रुचि पारंपरिक बुनाई समुदायों के लिए महत्वपूर्ण खतरा है।

आगे का रास्ता:

- हालांकि ये चुनौतियां नवाचार और सहयोग के अवसर भी प्रस्तुत करती हैं। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, कौशल विकास में निवेश करके और हितधारकों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देकर भारतीय बुनकर बाधाओं को दूर कर सकते हैं और तेजी से बदलती दुनिया में आगे बढ़ सकते हैं।
- जैसे-जैसे दुनिया पर्यावरणीय चुनौतियों से जूझ रही है, भारतीय कपास निगम द्वारा की गई पहल आशा की किरण के रूप में काम करती है। परंपरा को नवीनता और स्थिरता के साथ जोड़कर, भारतीय कपास निगम न केवल भारतीय बुनाई की समृद्ध विरासत को संरक्षित करता है बल्कि एक उज्ज्वल, हरित भविष्य का मार्ग भी प्रशस्त करता है।